माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी की एम0एड0
उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबन्ध

सत्र 2014-15

शोध निर्देशक

डॉ0 अमरनाथ दत्त गिरि
(एसोसिएट प्रोफेसर)
शिक्षक शिक्षा विभाग

शोधकर्ता

अखिलेश सिंह
एम0एड0 (छात्र)

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, अतर्रा (बाँदा)
(सम्बद्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी)

घोषणा पत्र

मैं **अखिलेश सिंह** पुत्र श्री मान सिंह यादव एम0एड0 छात्र (2014–15) घोषणा करता हूँ कि "**माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन**" शीर्षक लघु शोध प्रबन्ध मेरा मौलिक कार्य है। इसे न तो कहीं प्रस्तुत किया गया है और न ही प्रकाशित।

शोधकर्ता

अखिलेश सिंह

(अखिलेश सिंह)

दिनांक : 25/03/2015

स्थान : अतर्रा

आभार

सर्वप्रथम मैं शिक्षक शिक्षा विभाग, अतर्रा महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर **डा0 अमरनाथ दत्त गिरि** के समक्ष अपना आभार प्रकट करता हूँ जिनके निर्देशन में यह लघु शोध प्रबन्ध पूरा हुआ है। इसके पश्चात मैं विभाग के असिस्टेन्ट प्रोफेसर **डा0 राजीव अग्रवाल तथा डा0 सुशील कुमार** का भी अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने प्रस्तुत शोध कार्य को पूरा करने में अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

मैं उन इण्टरमीडिएट कालेज के प्रधानाचार्यों एवं उनमें पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं को भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनके द्वारा सम्बन्धित प्रश्नावली को भरवाने में सहायता मिली। साथ ही अपने युवा मित्रों में अतुल कुमार जी, देवेन्द्र प्रताप सिंह, अश्वनी कुमार का आभारी हूँ जिन्होंने इस शोध कार्य को पूर्ण कराने में सहयोग प्रदान किया।

मैं उन सभी लोगों का भी आभार व्यक्त करता हूँ। जिनसे मुझे इस लघु शोध प्रबन्ध को पूरा करने में प्रेरणा अथवा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अन्त में मैं अपने माता–पिता का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने बड़े उत्साह के साथ अपना सहयोग एवं संरक्षण प्रदान किया मेरी अब तक की सम्पूर्ण शैक्षिक सफलता उनकी ही कामना एवं प्रेरणा का प्रतिफल है।

विषयानुक्रमणिका

अध्याय	पृष्ठ सं0

अध्याय - प्रथम

प्रस्तावना

इतिहास पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि मानव की प्रकृति सदैव सीखने की रही है। प्रत्येक वस्तु को देखकर उसके विषय में सहज जिज्ञासा का भाव मानव के मन में उत्पन्न हो जाता है, इसी भावना के कारण मानव सदैव उन्नति के पथ पर अग्रसर हुआ है। जहाँ प्रकृति ने एक ओर जिज्ञासा की भावना उत्पन्न की है वहीं दूसरी ओर प्राणी में इतनी बुद्धि भी दी है, कि वह उसका प्रयोग कर सके। बालक जन्म से अबोध होता है, धीरे–धीरे बालक विकास की ओर बढ़ता है। शारीरिक परिवर्तन के साथ उसका मानसिक विकास भी होता है तथा वह सामाजिक वातावरण से सामंजस्य करना सीखता है, बुद्धि के साथ जो वह सीखता है उसका कारण शिक्षा है। अस्तु शिक्षा के ही कारण बालक ज्ञान और विवेक प्राप्त कर सकने में समर्थ होता है।

वैसे तो विश्व में सभी जीव जीवन जीते हैं, किन्तु शिक्षा इसलिए दी जाती है कि मनुष्य अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को कलात्मक, सुन्दर और सुखमय बनाए और इस प्रकार जीवन यापन करे कि दूसरे भी उससे प्रेरणा पाकर सुखमय जीवन व्यतीत कर सकें एवं 'जीने की कला' का उन्हें ज्ञान हो जाए। जीने की कला का अर्थ है– वह जीवन पद्धति जिसमें मनुष्य स्वस्थ, सत्यता, सुन्दरता एवं सद्व्यवस्था के साथ इस प्रकार निश्चिन्तपूर्ण जीवन व्यतीत करें कि उसकी वाणी मृदु एवं प्रिय हो, उसकी वेशभूषा सरल, सुन्दर एवं आकर्षक हो एवं सम्पूर्ण चरित्र अनुकरणीय हो। बालक को इस कलात्मक साँचे में ढाल देना ही वास्तविक शिक्षा है।

1.1 शिक्षा–

शिक्षा व्यक्ति एवं समाज दोनों पक्षों का उन्नयन करने वाली होनी चाहिए क्योंकि बालक जन्म के समय एक निर्मल दर्पण के सदृश होता है जिस पर कोई भी आकृति अपनी छाप डाल सकती है। शनैः शनै उसके विकास के साथ–साथ बालक के मस्तिष्क में स्थायित्व की भावना आ सकती है एवं उसमें 'स्व' तथा 'पर' में भेद करने की शक्ति आ जाती है। यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि शिक्षा विकास का वह क्रम है जिसके द्वारा बालक अपने भौतिक तथा सामाजिक वातावरण में सामंजस्य स्थापित करता है। जन्म से लेकर विद्यालय में प्रवेश पाने के पूर्व तक बालक में अपने परिवार व सम्पर्क में आने वाले अन्य व्यक्तियों का प्रभाव पड़ता है। अतः वह इस समय तक की शिक्षा इन्हीं से प्राप्त करता है अपने व्यापक अर्थ में शिक्षा उन सभी वस्तुओं को समेटे हुए हैं जिनका प्रभाव किसी भी प्रकार से एक दूसरे पर पड़ता है। पॉच वर्ष की अवस्था प्राप्त करने के बाद बालक विद्यालय जाना प्रारम्भ कर देता है। उसका अधिक से अधिक समय विद्यालय में व्यतीत होता है उस पर अपने सहयोगियों और अध्यापकों का भी स्पष्ट प्रभाव पड़ने लगता है। इस प्रकार धीरे–धीरे अनेक अनुभवों द्वारा बालक अपने को समर्थ बना सकने में सफल हो सकता है।

वर्तमान शिक्षाशास्त्रियों का कहना है कि सुखमय, कल्याणकारी सामाजिक जीवन व्यतीत करने के लिए शिक्षा आवश्यक है क्योंकि शिक्षा ही वह उपकरण माना गया है जिसके द्वारा व्यक्ति के सामाजिक जीवन का निर्माण होता है और बालक में यह चेतना आती है कि मै भी समाज का एक अंग हूॅ मनुष्य ही संसार का ऐसा प्राणी है जिसमें सब प्राणियों की विलक्षण तथा अदभुत शक्तियॉ निहित हैं अतः दबी हुई अज्ञात शक्तियों को उदभव करके बालक को शक्तिबोध कराना

आवश्यक है क्योंकि मानव ऐसे वातावरण में पलता है कि उसमें सब परिस्थितियों को सम्भाल सकने की शक्ति नहीं होती। वह अनिर्दिष्ट एवं स्वाभाविक रूप से जो सीखता है उसकी गति मन्द और प्रायः निरर्थक एवं भ्रमपूर्ण होती है।

अब प्रश्न उठता है कि यह ज्ञान देने वाला कौन हो सकता है ? समाधान मिलता है– 'शिक्षक', शिक्षक ही वह इकाई है जिसका संबल लेकर बालक अपने जीवनपथ पर अग्रसर हो सकता है जिस प्रकार कलाकार रंग, ध्वनि, छेनी आदि के द्वारा चित्र, संगीत, काव्य एवं मूर्ति की सृष्टि करता है इसी प्रकार शिक्षक भी अपनी विद्या, ज्ञान, कौशल, सहानुभूति आदि गुणों से मानवता का निर्माण करता है। कलाकार के समान ही शिक्षक भी विद्यार्थियों का गुरू ही नहीं अपितु हितचिन्तक एवं मित्र भी है वह बताता है कि जीवन का कौन सा मार्ग कंटकाकीर्ण है एवं किस मार्ग पर चलने से बालक का कल्याण हो सकता है।

1.2. शिक्षक का महत्व–

किसी भी शैक्षिक व्यवस्था में शिक्षा के अन्य साधनों की अपेक्षा शिक्षक की योग्यता सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य है। देश के समस्त शैक्षिक अनुसंधानों की जितनी भी योजनाएं हैं सबका केन्द्र बिन्दु शिक्षक की स्थिति में सुधार ही है ऐसा कहा जाता है कि देश में शिक्षकों की वर्तमान दशा अत्यन्त सोचनीय है उसमें सुधार किए बिना हम शिक्षा के विकास की आशा नहीं कर सकते।

भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही गुरू को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है प्राचीन काल में केवल शिष्य की नहीं, अपितु राजा–प्रजा एवं सभी वर्गों के व्यक्तियों के

हृदय में गुरू के प्रति असीम श्रद्धा की भावना होती थी विद्यार्थी को अपने गुरू के प्रत्येक कार्य में सहयोग देना पड़ता था।

भारत में प्रवीण, कुशाग्र एवं मेधावी शिक्षकों की एक दीर्घ सूची प्राचीन शिक्षा के इतिहास में मिलती है वैदिक काल से लेकर स्वामी रामकृष्ण परमहंस तक ऐसे अनेक शिक्षकों के नाम उल्लेखनीय है, जिन्होंने अपने छात्रों का भविष्य निर्माण करने में सम्पूर्ण जीवन उत्सर्ग कर दिया। गुरू को समाज में सर्वोच्च स्थान दिया गया है। यथा–

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।

गुरू साक्षात्परब्रह्मा तस्मै श्री गुरूवेनमः।।

प्राचीन का शिक्षार्थी अपने गुरू के चरणों में रहकर शिक्षा प्राप्त करता था एवं तन, मन, धन सब अपने गुरू को ही अर्पण कर देना अपना कर्तव्य समझता था। गुरू का भी यही कर्तव्य था कि वह विद्यार्थी का हर प्रकार से ध्यान रखें हमारे भारतीय साहित्य में स्थान–स्थान पर आचार्य की महिमा का मान किया है। शतपथ ब्राह्मण में एक स्थान पर कहा गया है–

''मातृमान् पितृमान् चार्यवान पुरूषोवेद''

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में कहा है–

''मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव।''

अर्थात बालक के माता–पिता, आचार्य तीनों ही देवता होते हैं। ''तमसो मा ज्योर्तिगमय'' ही गुरू का कर्तव्य था। किसी विद्यार्थी के नैतिक पतन अथवा

दोनों का पूर्ण उत्तरदायित्व शिक्षक पर ही था। गुरूकुल शिक्षा व्यवस्था में बालक को अपने सामाजिक विकास का भी पूर्ण अवसर प्राप्त हो जाता था।

मध्यकाल में आकर जब इस्लामी युग आया तब गुरू भक्ति का आदर्श इतना उच्च नहीं रहा जितना कि प्राचीन काल में था। फिर भी शिष्य गुरूओं का आदर करते थे और उनकी सेवा करते थे। समाज में शिक्षक का आदर होने के कारण विद्यार्थी भी आदर करते थे।

आधुनिक कोलाहलपूर्ण तथा भौतिकता प्रधान वातावरण में लोगों के विचार में ऐसा नहीं है। आधुनिक युग विज्ञान का युग है जिसमें हर क्षण परिवर्तन होता रहता है और समय एवं परिस्थितियों के बदलने के साथ शिष्य एवं अन्य वर्ग के लोगों के हृदय में गुरू के प्रति श्रद्धा की भावना का ह्रास होता जा रहा है। समाज में शिक्षक का वह उच्च स्थान नहीं रहा है। प्राचीन काल में शिक्षक अपने विषय का विशेषज्ञ होता था, उसका प्रमुख कार्य था–'बालक का विकास'। आधुनिक युग में राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्रान्ति तथा पाश्चात्य सभ्यता के फलस्वरूप मानव के विचारों में परिवर्तन आ गया। पाश्चात्य सभ्यता के फलस्वरूप भारतीय जनता भौतिकता को अपनाने लगी और शिक्षा का उद्देश्य सर्वांगीण विकास करना नहीं, वरन जीविकोपार्जन का एक साधन मात्र रह गया है। प्राचीन काल में गुरूत्व त्याग एवं परिश्रम से प्राप्त होता था। वहीं आज एक व्यवसाय बन गया है। शिक्षकों का मुख्य उद्देश्य केवल धनोपार्जन ही रह गया है। आज शिक्षकों को न तो इतना उच्च स्थान प्राप्त है न इतनी सुविधाएं कि वह सांसारिक सुखों से अलग जंगलों में रहकर शिक्षा प्रदान करें।

अतः शिक्षा एवं शिक्षक का आदर कम हो गया यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति आज भी शिक्षा को महत्वपूर्ण मानता है लेकिन शिक्षक को अपना प्राचीन स्थान नहीं मिल सका है। शिक्षक का दायित्व है कि वह एक अच्छे समाज के निर्माण में सहायक बने क्योंकि शिक्षक एक उच्च कोटि की इकाई है संसार की महान विभूतियाँ व समाज सुधारक सच्चे अर्थ में मानव जाति के शिक्षक थें। हमारे युग

के शिक्षक भी यदि उनका अनुसरण करें, तो एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकते हैं।

1.3 समस्या की अनुभूति–

शिक्षक को अपने अध्यापन कार्य को कक्षा में इस प्रकार क्रियान्वित करते हुए सरल रूप में प्रस्तुत करना चाहिए कि छात्र विषय वस्तु की सामान्य जानकारी से आगे बढ़ते हुए उसके कार्य कारण तथा सम्यक मूल्यांकन को भी प्राप्त कर सकें परन्तु वर्तमान में शिक्षण का यह स्वरूप विरलय ही किसी भी स्तर की कक्षा में देखने को मिलता हैं क्योंकि वर्तमान शिक्षा का स्वरूप इस भौतिकवादी युग में क्रेता और विक्रेता के रूप में हो गया है। शिक्षक अपने ज्ञान को बेच रहा है तथा छात्र खुशी पूर्वक उसे खरीद रहें है जिससे शिक्षक तथा छात्रों के बीच आदि काल से स्थापित गुरू–शिष्य परम्परा का ह्रास हो रहा हैं जिसकी परिणति स्वरूप हमें आये दिन अखबारों में छात्र–छात्राओं द्वारा अपने अध्यापकों का अपमान किए जाने सम्बन्धी खबरें पढ़ने एवं देखने को मिलती है। इस प्रकार हम कह सकतें है कि वर्तमान शिक्षा में गुरू शिष्य परम्परा को नए सिरे से परिभाषित करने की आवश्यकता है इसलिए शोधार्थी को छात्र–छात्राओं द्वारा अपने अध्यापकों के प्रति किए जाने वाले व्यवहार को जानने एवं समझने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

1.4 समस्या कथन–

अनुसन्धानकर्ता ने उपरोक्त समस्या को ध्यान में रखते हुए सीमित समय व साधनों के कारण **"माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन"** विषय बनाया है।

1.5 समस्या में आए शब्दों का परिभाषीकरण–

माध्यमिक शिक्षा का अर्थ–

माध्यमिक शिक्षा शैक्षिक संरचना की मध्यस्थ कड़ी है जिससे नीचे प्रारम्भिक शिक्षा और ऊपर विश्वविद्यालयी शिक्षा होती है माध्यमिक शिक्षा में 1

से 18 वर्ष तक के बालक–बालिकाएं शिक्षा प्राप्त करतें हैं। इसके अन्तर्गत कक्षा 9 से 12 तक शिक्षा दी जाती है। कक्षा 9 से कक्षा 10 को उच्च माध्यमिक तथा कक्षा 11 व कक्षा 12 को उच्चतर माध्यमिक स्तर कहा जाता है। इसलिए कक्षा 9 से कक्षा 12 तक की शिक्षा देने वाले विद्यालयों को उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कहा जाता है।

कार्टर वी वुड महोदय ने माध्यमिक शिक्षा का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा है कि ''माध्यमिक शिक्षा, **शिक्षा का वह समय हैं जो सामान्यतः 12 से 17 वर्ष तक के वर्ग के लिए होता है। इस काल में अध्ययन के प्रमुख उपकरणों का प्रयोग स्वामित्व, अभिव्यक्ति वैचारिक स्वतन्त्रता, विविध जानकारी प्राप्त करने बौद्धिक कुशलता, अभिरूचि और आदर्शों तथा आदतों के निर्माण पर बल दिया जाता है।**'' भारत वर्ष के सन्दर्भ में माध्यमिक शिक्षा का काल 14 से 18 वर्ष की आयु का माना गया है।

अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम का अर्थ–

अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों से तात्पर्य उन माध्यमिक विद्यालयों से है जो अपना समस्त पाठ्यक्रम अंग्रेजी भाषा में पढ़ाते हैं एवं विद्यालय की अधिकतर कार्य प्रणाली अंग्रेजी भाषा में ही पूर्ण कराई जाती है इस माध्यम के विद्यालयों को CBSE, ICSE आदि बोर्डों के द्वारा मान्यता प्रदान की जाती है एवं हिन्दी माध्यम के विद्यालयों का अर्थ उन माध्यमिक विद्यालयों से है जो समस्त पाठ्यक्रम को हिन्दी से ही अध्ययन कराते हैं एवं विद्यालय मे हिन्दी भाषा में ही शिक्षण कार्य कराया जाता है।

अभिवृत्ति–

अभिवृत्ति का महत्व व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। किसी विद्यार्थी की अभिवृत्ति अपने शिक्षक के प्रति यदि अच्छी है तो निश्चित रूप से उस पर शिक्षक का अच्छा प्रभाव पड़ेगा। वह उसके गुणों की प्रशंसा करेगा, जो उसके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन जायेंगे। साधारणतः यह देखा

गया है कि विद्यार्थी जिस अध्यापक में अधिक रूचि रखता हैं, उस अध्यापक की प्रत्येक क्रिया की वह प्रशंसा करता है, उस अध्यापक द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषय में अधिक रूचि लेने लगता है। इससे उसकी शिक्षा पर भी प्रभाव पड़ता है। यदि बालक को उसकी अभिरूचि या अभिवृत्ति के अनुरूप कार्य करने दिया जाए तो वह प्रगति करता है और उसकी प्रगति तेजी से होती है, क्योंकि आज का विद्यार्थी कल के समाज व राष्ट्र का निर्माता होता है। अतः समाज व राष्ट्र के विकास हेतु यह आवश्यक है कि विद्यार्थी अपने शिक्षक के प्रति स्वस्थ अभिवृत्ति रखे। अतः यह जानना आवश्यक हो जाता हैं कि छात्र शिक्षकों के प्रति कैसी अभिवृत्ति रखतें हैं। उनकी अभिवृत्ति को स्वस्थ रखने के लिए शिक्षकों व छात्रों को अपने में क्या–क्या परिवर्तन करने चाहिए।

अभिवृत्ति शब्द की परिभाषा–

शिक्षकों के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति जानने से पूर्व यह आवश्यक है कि पहले अभिवृत्ति शब्द का स्पष्टीकरण कर लिया जाए, विभिन्न विद्वानों ने इसे अलग–अलग शब्दों से परिभाषित किया है–

गार्डन एलपोर्ट महोदय इसकी परिभाषा इस प्रकार करते हैं–

"An attitude is a mental and neutral set of readiness organized through experience, exerlong a directive or dynamic influence upon the indiduals response to all objects and situation with it is related."

थर्सटन महोदय के अनुसार–"A generalized reaction for against a specific psychological object."

बोगार्डस महोदय के अनुसार–"A Tendency to act towards or against some environmental factor which become there by a positive or negative value."

उपरोक्त परिभाषा के आधार पर अभिवृत्ति के निम्न लक्षण बताए जा सकते हैं–

1. अभिवृत्तियों का प्रसार असीमित हैं।

2. अभिवृत्तियों में व्यक्तिगत विभेद होते है।
3. यह आव्यक्त भी हो सकती है और व्यक्त भी।
4. यह हमारे सम्पूर्ण व्यवहार में समन्वित होती हैं।
5. ये वातावरण जन्य हैं, न कि जन्मजात।
6. अभिवृत्तियॉ पर्याप्त रूप से स्थायी होती है।
7. इनमें परिवर्तन या संशोधन सम्भव नहीं है।
8. विभिन्न समुदाय की अभिवृत्तियाँ भी अलग–अलग होती हैं।
9. अभिवृत्तियॉ एक व्यक्ति या वस्तु के प्रति हो सकती हैं।
10. अभिवृत्तियों का अस्तित्व बिना एक पृष्ठभूमि के नहीं होता है।

1.6 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

प्राचीन भारत में शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। इसका एक प्रमाण यह है कि शिक्षा को प्रकाश का स्त्रोत, अन्तर्दृष्टि, अन्तज्योंति, ज्ञान चक्षु और मनुष्य का तीसरा नेत्र माना जाता था। उस युग के भारतीयों का विचार था कि शिक्षा का प्रकाश, व्यक्ति के सब संशयों का उन्मूलन और उनकी सब बाधाओं का निवारण करता है शिक्षा से प्राप्त अन्तर्दृष्टि व्यक्ति की बुद्धि, विवेक और कुशलता में वृद्धि करती है। शिक्षा व्यक्ति को वास्तविक शक्ति से सम्पन्न करती है, उसके सुख एवं समृद्धि में योग देती है, उसे जीवन के यथार्थ महत्व को समझने की क्षमता प्रदान करती है और उसे भवसागर को पार करके, मोक्ष प्राप्ति में सहायता देती है।

शिक्षा के महत्व के सम्बन्ध में उपरिअंकित और अनेक अन्य धारणाएं व्यक्त करके भारतीयों ने यह विशवास व्यक्त किया कि शिक्षा कामधेनु कें कल्पतरू के समान व्यक्ति की सब मनोकामनाओं को पूर्णकरती है और उसका सर्वांगीण विकास करती है।

डॉ0ए0एस0अल्तेकर के अनुसार–

"शिक्षा को प्रकाश और शक्ति का ऐसा स्त्रोत माना जाता था, जो हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरन्तर एवं सामंजस्यपूर्ण विकास करके हमारे स्वभाव को परिवर्तित करती है और उसे उत्कृष्ट बनाती है।"

1.7 अध्ययन के उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं–

1. अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का अपने शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. हिन्दी माध्यम में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का अपने शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का अपने शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.8 अध्ययन की परिकल्पना–

जब शोधकर्ता किसी शोध समस्या का चयन कर लेता है तो वह उसका एक अस्थाई समाधान एक जॉचनीय प्रस्ताव को तकनीकी भाषा में परिकल्पना कहा जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित परिकल्पना निर्मित की गई–

- अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अपने शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.9 अध्ययन का सीमांकन–

मैंने अध्यापकों के प्रति शहरी स्तर के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति के तुलनात्मक अध्ययन के लिए कक्षा 12 में पढ़ने वाले नगरीय स्तर के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति जानने का प्रयास किया है क्योंकि इस स्तर पर छात्र–छात्राओं का पूर्ण विकास हो जाता है तथा वे प्रत्येक कार्य को तर्क के आधार पर करते हैं व सोचते है।

अतः शोधकर्ता के रूप में मैंनें अपने अध्ययन को निम्न क्षेत्रों में ही बांधनों की कोशिश की है–

1. प्रस्तुत अध्ययन फतेहपुर जनपद के छात्र–छात्राओं तक सीमित रखा है।
2. इस अध्ययन हेतु मात्र चार माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।
3. इस अध्ययन में इण्टरमीडिएट स्तर के 200 छात्र–छात्राओं को शामिल किया गया है।
4. यह अध्ययन शहरी छात्र एवं छात्राओं के केवल अध्यापकों के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित हैं।

अध्याय-द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का अनुशीलन

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसन्धान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं एवं शोध अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण एवं अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने व कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

2.1 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ–

वस्तुतः सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसन्धानकर्ता का कार्य अन्धे के तीर के समान होगा। इसके अभाव में सही दिशा में वह एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता। जब तक उसे पता न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आएं हैं तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य सम्पन्न ही कर सकता है।

बेस्ट के अनुसार–

''व्यावहरिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तक एवं पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में नए सिरे से प्रारम्भ करते हैं। मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहीत एवं सुरक्षित रखता है ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का निरन्तर योग सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।''

डब्ल्यू0 आर0बोर्ज के अनुसार–

''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सारा भावी कार्य आधारित होता है यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नीव को दृढ कर लेते तो हमारा कार्य प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना है अथवा यह पुनरावृत्ति भी हो सकती है।''

गुड, बार तथा स्केट्स के अनुसार–

''एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्रों में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र–छात्राएं, अनुसन्धान के क्षेत्र में कार्य करने वाले, तथा अनुसन्धानकर्ता के लिए भी क्षेत्रों से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।''

2.2 सम्बन्धित साहित्य की आवश्यकता एवं महत्व–

अनुसन्धान कार्यों से सम्बन्धित साहित्य के अनुशीलन करने की आवश्यकता, उपयोगिता तथा महत्व स्वयं सिद्ध है अनुसन्धान क्षेत्र से सम्बन्धित साहित्य के अनुशीलन के बिना अनुसन्धानकर्ता का कार्य अन्धेरे में तीर चलाने के समान हो जाता है। सम्बन्धित साहित्य के अनुशीलन के द्वारा अनुसन्धानकर्ता उस क्षेत्र में क्या कार्य हो चुका है? क्या करना शेष है? आदि बातों से परिचित होता है जो उसे अपनी समस्या को सार्थक, मौलिक तथा अद्वितीय बनाता है एवं अनुसन्धान की एक उपयुक्त रूपरेखा तैयार करने में मदद करती है। अनुसंधान में साहित्य के अनुशीलन की आवश्यकता तथा महत्व के बारे में विद्वानों ने अपने–अपने ढंग से विचार व्यक्त किए हैं।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार–

"व्यावहारिक दृष्टि से समस्त मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है अन्य जीवों जिन्हें प्रत्येक पीढ़ी में नए सिरे से प्रारम्भ करना पड़ता है, से भिन्न मान पूर्व में संग्रहीत व अभिलेखित ज्ञान से निर्माण करता है ज्ञान के अथाह भण्डार में उसके सतत योगदान ही मानव प्रयासों के सभी क्षेत्रों में प्रगति को सम्भव बनाते हैं।"

"Practically all human knowledge can be found in books and libraries. Unlike other animals that must start a new with each generation, man builds upon the accumulated and recorded knowledge of the past his constant adding in the vaste store of knowledge makes possible progress in all areas of endeavour."

John W. Best.

अतः सम्बन्धित साहित्य का अनुशीलन अनुसन्धान के औचित्य को स्पष्ट करने, रूपरेखा को बनाने एवं प्रदत्तों के संकलन व व्याख्या में महत्वपूर्ण सहायता करता है वस्तुतः अनुसन्धान के प्रत्येक स्तर पर यह अत्यन्त सहायक होता है सम्बन्धित साहित्य के अनुशीलन का निम्नलिखित महत्व है–

1. यह सम्बन्धित अध्ययन क्षेत्र में किए जा चुके कार्य की जानकारी प्रदान करके अपेक्षित अनुसन्धान कार्य को रेखांकित करता है।
2. यह चयनित समस्या की सार्थकता, आवश्यकता तथा महत्व को स्पष्ट करता है एवं अपेक्षित परिणामों के निहितार्थों को इंगित करता है।
3. यह सम्बन्धित सम्प्रत्ययों, अभिधारणाओं व सिद्धान्तों आदि को स्पष्ट करके अनुसन्धान के लिए सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

4. यह समस्या के सीमांकन करने, परिभाषीकरण करने, परिकल्पना के निरूपण तथा अनुसन्धान अभिकल्प के निर्माण में सहायक होता है।
5. यह क्या हो चुका है? क्या करना शेष है? से अलग करके पूर्व में सम्पन्न अनुसन्धान कार्यों की पुनरावृत्ति से बचाते हुए उपयोगी समस्याओं को सामने लाता है।
6. यह अनुसन्धान कार्य में प्रयुक्त की जा सकने वाले सम्भावित तरीकों, उपकरणों व प्रविधियों आदि की जानकारी प्रदान करता है।
7. यह सम्बन्धित अध्ययन क्षेत्र में भावी अध्ययनों के लिए नई व महत्वपूर्ण समस्याओं, जिज्ञासाओं, कठिनाइयों आदि की ओर इशारा करता है।
8. यह शोधकर्ता को विभिन्न सोपानों पर सावधान रखते हुए अनजाने में हो सकने वाली तरह–तरह की त्रुटियॉ करने से बचाता है।
9. यह अनुसन्धान कार्य को समय, श्रम व व्यय की दृष्टि से मितव्ययी बनाकर उसे अनुसंधानकर्ता के लिए व्यवहारिक तथा सम्भाव्य बनाता है।

2.3 पिछले किए गए शोध–कार्यों का विवरण–

1. मिथिलेश श्रीवास्तव (1998) ने ''कानपुर विश्वविद्यालय के प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की अध्यापकों के प्रति मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया।
2. गीता गुप्ता (1999) ने ''चौदह से सोलह वर्ष आयु तक के किशोर छात्र एवं छात्राओं की धमकी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' किया।
3. मेराज बेगम (2000) ने ''अध्यापकों के प्रति छात्राओं की आलोचनात्मक मनोवृत्ति का अध्ययन'' किया।
4. मेंहदी हसन (2001) ने ''अध्यापकों के प्रति पूर्व स्नातकोत्तर छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'' किया।
5. धर्मेन्द्र सिंह (2002) ने ''बी0एड0 तथा एम0एड0 स्तर के छात्र–छात्राओं का अध्यापकों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'' किया।

समीक्षा–

उपर्युक्त विवेचन से विदित होता है कि शोधकार्य की दृष्टि से यह नवीनतम् विषय है, जिसे शोधकर्ता ने चुना है क्योंकि प्रशिक्षण के समय विभिन्न अध्यापकों के प्रति अनेक भाव छात्र–छात्राओं के मन में उठतें हैं इसी जिज्ञासा को शोधकर्ता ने लघु शोध प्रबन्ध के रूप में साकार किया है यह कार्य सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के बिना पूर्ण नहीं हो सकता था।

2.1 समस्या का महत्त्व–

माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन शिक्षा के दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राएं शिक्षा प्राप्त करके देश के भविष्य का निर्माण करते हैं दूसरे रूप में हम कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर की शिक्षा से समाज एवं राष्ट्र के भावी नागरिकों का निर्माण होता है अतः बालक एवं बालिकाओं की कच्ची उम्र में शिक्षक का बहुत प्रभाव पड़ता है यह देखा गया है कि बालक अपने अभिभावकों की बात को उतना महत्व नहीं देता है। जितना कि अपने शिक्षकों की बात को महत्व देता है। उसके ऊपर शिक्षक का बहुत अधिक प्रभाव रहता है। अतः बालकों के उचित विकास हेतु आवश्यक है कि शिक्षक भी स्वस्थ अभिवृत्ति वालें हों और उनकी अभिवृत्ति भी अपने शिक्षकों के प्रति अच्छी रही हों अतः इस ध्येय को ध्यान में रखकर छात्र–छात्राओं का शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। अध्यापकों के प्रति छात्र–छात्राओं का प्रश्नावली द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों के द्वारा अभिवृत्ति ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

अध्याय-तृतीय

शोध विधि

3.1 अध्ययन विधि–

अनुसन्धान कार्य को प्रमाणिक तरीके से करने के लिए उपयुक्त अध्ययन विधि का निर्धारण बहुत ही आवश्यक होता है क्योंकि अनुसन्धान चाहे प्रयोगात्मक हो या अप्रयोगात्मक उसके लिए बहुत सी विधियों का आविष्कार विद्वानों द्वारा किया गया है जैसे–

- सर्वेक्षण विधि
- ऐतिहासिक विधि
- क्रियात्मक अनुसन्धान विधि
- व्यक्तिगत अध्ययन विधि
- क्षेत्र अध्ययन विधि

प्रस्तुत समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है सर्वेक्षण विधि व्यापक रूप से प्रयोग की जाने वाली विधि में से एक है।

एफ0एफ0 करलिंगर ने सर्वेक्षण विधि की व्याख्या निम्न प्रकार से की है–

"सर्वेक्षण अनुसन्धान सामाजिक अन्वेषण की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत व्यापक तथा कम आकार वाली जनसंख्या का अध्ययन उनमें से चयनित प्रतिदर्श के आधार पर इस आशय से किया जाता है ताकि उनमें व्याप्त सामाजिक तथा

मनोवैज्ञानिक चरों के घटनाक्रमों, विवरणों तथा पारस्परिक अन्तः सम्बन्धों का ज्ञान उपलब्ध हो सके।''

शैक्षिक उद्देश्यों के सन्दर्भ में सर्वेक्षण विधि का वर्गीकरण निम्न प्रकार से होता है।

- विद्यालय सर्वेक्षण
- मूल्यांकन सर्वेक्षण
- समुदाय सर्वेक्षण
- जनमत सर्वेक्षण

प्रस्तुत शोध अध्ययन विद्यालय सर्वेक्षण पर आधारित है।

3.2 अध्ययन के चर–

मनोवैज्ञानिक शोध तथा शैक्षिक शोध में कई तरह के चरों का प्रयोग होता है।

डी0 एमैटो के अनुसार–

''किसी प्राणी, वस्तु या चीज के मापने योग्य गुणों को चर कहा जाता है।''

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित चर हैं–

स्वतन्त्र चर–

स्वतन्त्र चर वह चर है जिसके मूल्यों में प्रयोगकर्ता परिवर्तन करता है और इस परिवर्तन का प्रभाव उस आश्रित चर पर देखता है प्रस्तुत अध्ययन में **'अंग्रेजी माध्यम'** एवं **'हिन्दी माध्यम'** के विद्यार्थी 2 स्वतन्त्र चर हैं।

आश्रित चर–

किसी भी शोध में आश्रित चर वह होता है जिसके बारे में शोधकर्ता कुछ पूर्व कथन करना चाहता है। प्रस्तुत अध्ययन में **'शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति'** आश्रित चर है।

3.3 जनसंख्या एवं न्यादर्श–

जनसंख्या–

शोधकर्ता द्वारा अपने अध्ययन कार्य हेतु फतेहपुर जनपद का क्षेत्र चुना गया है तथा जनसंख्या में फतेहपुर में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों को लिया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन–

शोधकर्ता अपने शोध के पूर्ण जनसंख्या से निश्चित संख्या में कुछ सदस्यों या वस्तुओं का चयन कर लेता है जिसमें सम्पूर्ण जनसंख्या की विशेषताएं समाहित हों तथा ये सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हों इस चयनित संख्या को ही व्यवहारिक शोध में न्यादर्श कहा जाता है तथा न्यादर्श चयन करने की प्रविधि को न्यादर्शन कहा जाता है।

करलिंगर के अनुसार–

"किसी जीवसंख्या या समष्टि से उस जीवसंख्या या समष्टि के प्रतिनिधि के रूप में किसी भी संख्या का चयन प्रतिदर्श कहलाता है।"

अध्ययन का न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए **'उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श'** विधि को चुना है।

अध्ययन में लिए गए चार माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में से प्रत्येक से 50–50 विद्यार्थियों को लिया गया है। विद्यालय निम्न हैं–

1. विद्या निकेतन इण्टर कालेज, फतेहपुर
2. मदर सुहाग इण्टर कालेज, फतेहपुर
3. चन्द्रा बालिका इण्टर कालेज, फतेहपुर
4. राधेश्याम गुप्त इण्टर कालेज, फतेहपुर

तालिका : 3.1 न्यादर्श का विभाजन

विद्यार्थियों की संख्या		योग
अंग्रेजी माध्यम	हिन्दी माध्यम	200
100	100	

3.4 प्रयुक्त उपकरण–

अनुसन्धान के लिए समस्या के निश्चय एवं परिकल्पना निर्माण के बाद अनुसन्धानकर्ता के सामने यह समस्या आती है कि वह अपनी परिकल्पना के परीक्षण के लिए ऑकड़ो का संग्रह किस विधि से करे तथा किन उपकरणों के द्वारा करे अनुसन्धान में निम्न उपकरणों का प्रमुख रूप से उपयोग होता है।

1. प्रश्नावली (Questionnaire)
2. अवलोकन (Observation)
3. साक्षात्कार (Interview)
4. समाजमिति विधि (Sociometric technique)
5. विषयवस्तु विश्लेषण (Content analysis)
6. मापनी (Scale)

मापनी (Scale)-

मापनी एक ऐसा उपकरण है जिसके द्वारा व्यक्तियों को किसी समस्या अथवा विषय के प्रति अभिमत (Opinion) जानने का प्रयास किया जाता है इसके लिए शोधकर्ता द्वारा किसी कथन के प्रति सम्भावित कुछ विकल्पों को तैयार किया जाता है प्रत्येक कथन तीन, पाँच या सात विकल्पों या बिन्दुओं पर आधारित हो सकता है मापनी कई प्रकार की होती है। जैसे– अभिवृत्ति मापनी, मनोवृत्ति मापनी, बुद्धि मापनी आदि।

अभिवृत्ति मापनी–

अभिवृत्ति मापनी द्वारा व्यक्ति की किसी वस्तु, विचार या विषय के प्रति सोचने, महसूस करने, प्रत्यक्षीकरण एवं ब्यवहार करने की अभिमत (Opinion) को जानने का प्रयास किया जाता है जिस व्यक्ति की अभिवृत्ति को मापना होता है उसकी वाचिक प्रतिक्रियाओं को प्रत्येक कथन होता है उसकी वाचिक प्रतिक्रियाओं को प्रत्येक कथन के प्रति सहमति या असहमति अथवा तटस्थ के रूप में जमा किया जाता है यदि मापनी तीन बिन्दुओं वाली है शोधकर्ता पहले

से ही सुनिश्चित करता है कि वह कितने बिन्दुओ वाली मापनी का प्रयोग करेगा।

प्रस्तुत अध्ययन में लिकर्ट की योग निर्धारण विधि (Method of Summated Roting) द्वारा बनाई गई 'स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी' का प्रयोग 'उपकरण' के रूप में किया गया है। जिसमें कुल 36 प्रश्न है।

3.5 उपकरण की विश्वसनीयता एवं वैधता

विश्वसनीयता (Reliability)

विश्वसनीयता से तात्पर्य परीक्षण के प्राप्तांको (Test Score) में पाई जाने वाली संगति या स्थायित्व (Consistency) से होता है प्रत्येक परीक्षण में दो प्रकार की संगति पायी जाती है पहली संगति है– कालिक संगति (Temporal Consistency) तथा दूसरी संगति है आन्तरिक संगति (Internal Consistency) कालिक संगति का अर्थ होता है कोई भी परीक्षण जब वर्तमान समय तथा कुछ दिन बीतने के बाद भी संगत परिणाम (Consistent result) देता है तो उसे कालिक संगति कहते हैं तथा आन्तरिक संगति का अर्थ यह होता है कि यदि परीक्षण के एकांशों को दो भागों में या तीन भागों में बाँट लिया जाए तो प्रत्येक भाग के प्राप्तांको का कुल योग आपस में लगभग बराबर आता है जब परीक्षण में दोनों प्रकार की संगति पाई जाती है तभी परीक्षण को विश्वसनीय माना जाता है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण की वैधता .85 है।

वैधता (Validity)-

जब परीक्षण उस गुण, आदत या मानसिक प्रक्रिया को सही–सही मापता है जिसके लिए उसे बनाया गया है तो ऐसे परीक्षण को वैध परीक्षण कहा जाता है उदाहरण के लिए यदि बुद्धि मापने के लिए किसी परीक्षण का निर्माण किया गया है और वह वास्तव में बुद्धि का ही मापन करता है तो उस परीक्षण को वैध परीक्षण कहा जाएगा। वस्तुतः कोई भी परीक्षण अपने आप में न तो वैध होता है और न ही अवैध। उपयोग के आधार पर ही उसे वैध या अवैध करार दिया जाता है।

स्वनिर्मित परीक्षण की वैधता ज्ञात करने के लिए बनाए गए परीक्षण को किसी बाध्य कसौटी (सामान्यतः किसी दूसरे मानक परीक्षण) के साथ सह सम्बंधित (Correlate) किया जाता है। सह सम्बन्ध जितना अधिक होता है, परीक्षण की वैधता उतनी अधिक मानी जाती है।

3.6 उपकरण का प्रशासन

प्रस्तुत शोध में अनुसन्धानकर्ता ने अपनी उपस्थिति में अपनी स्वनिर्मित मापनी को फतेहपुर जनपद के चार माध्यमिक विद्यालयों के इण्टरमीडिएट के 200 छात्र–छात्राओं पर प्रशासित किया। मापनी को भरने के आवश्यक निर्देश देते हुए उसने छात्र–छात्राओं से कहा कि यह एक अभिवृत्ति मापनी है। जिसके द्वारा 'शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति' का परीक्षण किया जाएगा। मापनी में कुल 36 प्रश्न/कथन दिए गए हैं आप इसे ध्यान से पढ़ते हुए प्रत्येक कथन के सामने दिए गए 5 विकल्पों में से किसी एक पर सही का निशान लगाएं। ध्यान रहे प्रत्येक कथन में केवल एक विकल्प पर ही निशान लगाना है तथा सभी कथनों

पर निर्णय प्रदान करना आवश्यक है। इस कार्य हेतु 30 मिनट का समय निर्धारित है इसलिए भरने में किसी भी प्रकार की शीघ्रता न करें और न ही दूसरे व्यक्ति से राय लें। पूर्ण रूप से भरने के बाद आपको मापनी अनुसन्धानकर्ता को वापिस कर देनी है। आपके उत्तरों को गोपनीय रखा जाएगा एवं उसका प्रयोग केवल शोधकार्य में ही किया जाएगा।

3.7 प्रदत्तों का संकलन

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने प्रदत्तों के संकलन के लिए फतेहपुर जनपद के चार माध्यमिक विद्यालयों को चयनित किया तथा प्रत्येक विद्यालय से इण्टरमीडिएट के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के 50–50 विद्यार्थियों अर्थात कुल 200 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना। शोधार्थी ने चयनित प्रत्येक विद्यालयों (जिसका विवरण तालिका 3.1 पर दिया है) में व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क स्थापित करके छात्र–छात्राओं को आवश्यक निर्देश देते हुए 'अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति' पर आधारित अपनी स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी को भरवाया तथा भरी हुई सभी मापनियों को वापिस एकत्रित करके प्रत्येक छात्र–छात्रा द्वारा प्राप्त किए गए कुल प्राप्तांकों को ज्ञात किया।

3.8 प्रदत्तों का अंकन एवं सारणीयन

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त की गई अभिवृत्ति मापनी में कुल 36 कथन/प्रश्न हैं जिसमें 22 कथन सकारात्मक एवं 14 कथन नकारात्मक प्रकृति के हैं। प्रत्येक कथन का उत्तर पाँच सम्भावित बिन्दुओं (पूर्ण सहमत, सहमत, अनिश्चित,

असहमत, पूर्ण असहमत) पर आधारित है। सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के कथनों का अंकन (Scoring) इस प्रकार किया गया है।

कथन	सकारात्मक कथनों के लिए	नकारात्मक कथनों के लिए
पूर्णतः सहमत	5	1
सहमत	4	2
अनिश्चित	3	3
असहमत	2	4
पूर्णतः असहमत	1	5

चूँकि मापनी में कुल 36 कथन हैं अतः यदि कोई छात्र या छात्रा मापनी के सभी सकारात्मक कथनों के प्रति 'पूर्ण सहमत' तथा सभी नकारात्मक कथनों के प्रति 'पूर्ण असहमत' प्रतिक्रिया देता है तो उसका कुल प्राप्तांक 36 X 5 = 180 प्राप्त होगा। इसी प्रकार यदि वह..

- सभी सकारात्मक कथनों के प्रति 'सहमत' तथा सभी नकारात्मक कथनों के प्रति 'असहमत' है तो उसका कुल प्राप्तांक 36 X 4 = 144 होगा।
- सभी कथनों के प्रति अनिश्चित है तो उसका कुल प्राप्तांक 36 X 3 = 108 होगा।
- सभी सकारात्मक कथनों के प्रति 'असहमत' तथा सभी नकारात्मक कथनों के प्रति 'सहमत' है तो उसका कुल प्राप्तांक 36 X 2 = 72 प्राप्त होगा।

- सभी सकारात्मक कथनों के प्रति 'पूर्ण असहमत' तथा सभी नकारात्मक कथनों के प्रति 'पूर्ण सहमत' है तो उसका कुल प्राप्तांक 36 X 1 = 36 होगा।

इस प्रकार किसी भी परिस्थिति में कुल प्राप्तांक 36 से 180 के बीच में ही प्रसारित होंगे। प्रस्तुत शोध में उपरोक्त 'अंकन विधि' द्वारा ही छात्र–छात्राओं के अर्जित कुल प्राप्तांकों को ज्ञात किया है जिसका विवरण 'परिशिष्ट शीर्षक' के अन्तर्गत शोध रिपोर्ट के अन्त में संलग्न है।

3.9 प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रदत्तों का विश्लेषण तथा व्याख्या अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं का अध्यापकों के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन के लिए चार विद्यालयों के विद्यार्थियों के ऑकड़ो का एकत्रीकरण प्रश्नावली द्वारा किया गया है। ऑकड़ों की पाँच बिन्दु स्केल के द्वारा स्कोरिंग की। तत्पश्चात प्रत्येक वर्ग के परिणामों को पृथक–पृथक सारणीबद्ध किया गया है तथा वर्गान्तर और आवृत्ति का विवरण तैयार किया है।

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सांख्यिकी का उपयोग किया गया है जिसके अन्तर्गत मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात (CR) का उपयोग किया गया है।

1. मध्यमान का सूत्र

$$M = A.M. + \frac{\Sigma fd}{N} \times C.I.$$

M = मध्यमान (Mean)

A.M. = कल्पित मध्यमान (Assumed Mean)

Σfd = f व d के गुणनफलो का योग (Sum of Product of Fs and ds)

N = प्राप्तांकों की संख्या (No. of scores)

C.I. = वर्ग अन्तराल (Class Interval)

मध्यमान निकालने के बाद प्रत्येक कारक (Factor) का मानक विचलन (σ) ज्ञात किया जाता है।

2. मानक विचलन का सूत्र

$$S.D.(\sigma) = C.I\sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left[\frac{\Sigma fd}{N}\right]^2}$$

S.D. (σ) = मानक विचलन (Standard Deviation)

N. = प्राप्तांकों की संख्या

C.I. = वर्ग अन्तराल (Class Interval)

f = वर्गान्तर की आवृत्ति (Frequency of C.I.)

d = वर्गान्तर का मध्यमान से विचलन (Deviation of class Interval from mean.)

3. मानक त्रुटि

$$S.E_D = \sigma_D = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}$$

$S.E._D$ = दो प्रतिदर्श के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि

σ_1^2 = पहले प्रतिदर्श के मानक विचलन का वर्ग

σ_2^2 = दूसरे प्रतिदर्श के मानक विचलन का वर्ग

N_1 = प्रथम समूह के इकाइयों की संख्या

N_2 = द्वितीय समूह के इकाइयों की संख्या

तत्पश्चात मध्यमानों का अन्तर D ज्ञात किया जाता है।

4. आलोचनात्मक अनुपात

$$C.R. = \frac{M_1 \sim M_2}{S.E._D} = \frac{D}{S.E._D}$$

अन्तर की सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 लिया गया है।

5. स्वतन्त्रता के अंश

$$Df = (N_1 - 1) + (N_2 - 1)$$

N_1 = हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की संख्या

N_2 = अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की संख्या

अध्याय - चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणाम

4.1 प्रदत्त विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण

सारणी – 4.1

विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त प्राप्तांको का विवरण

वर्ग अन्तराल	आवृत्ति		कुल आवृत्ति
	हिन्दी माध्यम	अंग्रेजी माध्यम	
50–59	11	16	27
40–49	20	18	38
30–39	33	28	61
20–29	22	23	45
10–19	14	15	29
	N= 100	N= 100	200

सारणी – 4.2

अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

वर्ग–अन्तराल (C.I.)	आवृत्ति (f)	विचलन (d)	f.d.	$f.d^2$
50-59	11	+2	22	44
40-49	20	+1	20	20
30-39	33	0	0	0
20-29	22	-1	-22	22
10-19	14	-2	-28	56
	N=100		$\sum fd=-8$	$\sum fd^2=142$

मध्यमान $(M) = A.M. + \frac{\sum fd}{N} \times i$

सारणी से

$AM = 29.5$

$\sum fd = -8$

$N = 100$

$C.I. = 10$

मान सूत्र में रखकर हल करने पर

मध्यमान $(M) = 28.7$

प्रमाणिक विचलन $(S.D.) = C.I. \sqrt{\frac{\sum fd^2}{N} - \left(\frac{\sum fd}{N}\right)^2}$

सारणी से

$\sum fd^2 = 142$

$\sum fd = -8$

N = 100

C.I. = 10

मान सूत्र में रखकर हल करने पर

प्रमाणिक विचलन (S.D.) = 11.9

सारणी– 4.3

हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

वर्ग–अन्तराल (C.I.)	आवृत्ति (f)	विचलन (d)	f.d	$f.d^2$
50-59	16	+2	32	64
40-49	18	+1	18	18
30-39	28	0	0	0
20-29	23	-1	-23	23
10-19	15	-2	-30	60
	N=100		$\sum f.d = -3$	$\sum fd^2 = 165$

मध्यमान (M) = A.M. + $\frac{\sum f.d}{N} \times i$

सारणी में

AM = 29.5

$\sum fd = -3$

N = 100

C.I. = 10

मान सूत्र में रखकर हल करने पर

मध्यमान (M) = 29.2

प्रमाणिक विचलन (S.D.) = $C.I. \sqrt{\frac{\sum fd^2}{N} - \left(\frac{\sum fd}{N}\right)^2}$

सारणी में

$\sum fd^2 = 165$

$\sum fd = -3$

N = 100

C.I. = 10

मान सूत्र में रखकर हल करने पर

प्रमाणिक विचलन (S.D.) = 16.5

सारणी 4.4

अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

विद्यार्थी	
अंग्रेजी माध्यम	हिन्दी माध्यम
$M_1 = 28.7$ $S.D_1 = 11.9$	$M_2 = 29.2$ $S.D_2 = 16.5$

अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों की प्रमाणिक त्रुटि ($S.E_D$)-

$$S.E_d \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}$$

सारणी 4.4 से

$\sigma_1 = 11.9$

$\sigma_2 = 16.5$

$N_1 = 100$

$N_2 = 100$

मान सूत्र में रखकर हल करने पर

($S.E_D = 2.03$)

अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का क्रांतिक अनुपात (CR)-

$$CR = \frac{M_1 \sim M_2}{S.E_D}$$

सारणी 4.4 से

$M_1 = 28.7$

$M_2 = 29.2$

$S.E_D = 2.03$

मान सूत्र में रखकर हल करने पर

(C.R. = 0.24)

सारणी– 4.5

प्रदत्त विश्लेषण से प्राप्त सांख्यिकी

अध्ययन इकाई	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D)	प्रमाणिक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	परिणाम (.05 सार्थकता स्तर पर)
अंग्रेजी माध्यम	100	28.7	11.9	2.03	0.24	असार्थक
हिन्दी माध्यम	100	29.2	16.5			

4.2 परिकल्पना का परीक्षण–

विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का विश्लेषण करने पर क्रान्तिक अनुपात (CR) (जिसका विवरण सारणी 4.4 पर किया गया है) 0.24 प्राप्त हुआ। जो .05 सार्थकता स्तर के मानक मान 1.96 से कम है। अतः अध्ययन की परिकल्पना .05 सार्थकता स्तर पर असार्थक हो गयी जिससे अध्ययन की शून्य परिकल्पना की ''अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अपने अध्यापकों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकृत होती है।

परिणामतः यह कहा जा सकता है कि अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी (छात्र–छात्राएं) अपने अध्यापकों के प्रति समान विचार रखते हैं अर्थात अध्यापकों के प्रति अभिवृत्ति माध्यम–भेद से प्रभावित नहीं है।

4.3 प्राप्त परिणामों की व्याख्या–

कोई भी शोध तभी कार्य सम्पूर्ण माना जाता है जब शोधार्थी द्वारा सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग से निकाले गए मानों की सफलता पूर्वक व्याख्या कर दी जाती है।

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने संकलित आंकड़ों से मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात की गणना की है। गणना से प्राप्त परिणामों की व्याख्या निम्नवत है।

(अ) मध्यमान के आधार पर :

सारणी संख्या 4.4 के अनुसार अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 28.7 तथा 29.2 है जो कि पूर्णांक (60) का क्रमशः लगभग 48 प्रतिशत तथा 49 प्रतिशत है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक नहीं है।

(ब) प्रमाणिक विचलन के आधार पर :

सारणी संख्या 4.4 के अनुसार छात्र–छात्राओं का प्रामाणिक विचलन क्रमशः 11.9 तथा 16.5 है अर्थात उनके प्रमाणिक विचलन में अन्तर नहीं परन्तु कुछ विषयों में अन्तर अवश्य ही है।

(स) क्रान्तिक अनुपात के आधार पर :

छात्र–छात्राओं के अभिवृत्ति प्राप्तांकों का क्रान्तिक अनुपात .24 (सारणी 4.5 से) है जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है क्योंकि यह मान .05 सार्थकता स्तर के मानक मान 1.96 से कम है इसलिए शोध की परिकल्पना ''अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अपने अध्यापकों के प्रति अभिवृत्ति'' में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। स्वीकृत होती है।

अध्याय-पंचम

अध्ययन का निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1. शोध का सारांश :

1. **समस्या** : अध्ययन का विषय है– ''माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''

2. **उद्देश्य** : शोध के निम्न उद्देश्य निर्धारित है–

(i) अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का अपने शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

(ii) हिन्दी माध्यम में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का अपने शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

(iii) अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का अपने शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. **परिकल्पना** : अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अपने शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. **सीमांकन** : शोध का अध्ययन क्षेत्र फतेहपुर जनपद तक सीमित है साथ ही इसमें अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

5. **न्यादर्श** : शोध में फतेहपुर जनपद के चार माध्यमिक विद्यालयों से अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया है।

6. **उपकरण** : प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग उपकरण के रूप में किया है। जो लिकर्ट स्केल पर आधारित है। मापनी में कुल 36 कथन/प्रश्न हैं जिसमें 22 कथन सकारात्मक तथा 14 कथन नकारात्मक प्रकृति के हैं।

7. **चर** : शोध में कुल तीन चर हैं। दो स्वतन्त्र चर तथा एक आश्रित चर है। अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं को स्वतन्त्र चर के रूप में तथा शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति को आश्रित चर के रूप में प्रयोग किया गया है।

8. **अध्ययन विधि** : प्रदत्त संकलन के लिए शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है न्यादर्श के रूप में चुने गए सभी 200 छात्र–छात्राओं से व्यक्तिगत सम्पर्क करके मापनी भरवाई एवं निर्धारित मूल्यांकन विधि द्वारा उनके प्राप्तांकों का निर्धारण किया।

9. **प्रयुक्त सांख्यिकी** : संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए शोधार्थी ने वर्णनात्मक सांख्यिकी का उपयोग किया है जिसके अन्तर्गत मध्यमान (M) एवं प्रमाणिक विचलन (S.D.) एवं क्रांतिक अनुपात (CR) सम्मिलित हैं। प्रदत्त विश्लेषण के परिणाम स्वरूप छात्र एवं छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 28.7 तथा 29.2 प्राप्त हुआ, साथ ही उनके प्राप्तांकों का प्रमाणिक विचलन क्रमशः 11.9 तथा 16.5 है। अभिवृत्ति प्राप्तांकों का क्रान्तिक अनुपात 0.24 प्राप्त हुआ।

10. **परिकल्पना परीक्षण** : छात्र–छात्राओं द्वारा अर्जित प्राप्तांकों का क्रान्तिक अनुपात 0.24 प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर के मानक मान 1.96 से

कम है अतः अध्ययन की परिकल्पना .05 सार्थकता स्तर पर असार्थक हो गई।

5.2. शोध निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन है।

प्रदत्तों का संकलन उनके विश्लेषण तथा व्याख्या के उपरान्त निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं।

1. अध्यापकों के व्यक्तित्व सम्बन्धी कथनों के प्रति माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है अर्थात दोनों समूहों की अभिवृत्तियां अलग–अलग है।

2. अध्यापकों की व्यवहार विशेषताओं सम्बन्धी कथनों के प्रति माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों समूहों की अभिवृत्ति समान है।

3. अध्यापकों की व्यवसायिक विशेषताओं सम्बन्धी कथनों के प्रति माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अर्थात् दोनों समूहों की अभिवृत्ति समान है।

5.3. शोध निहितार्थ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर हम शिक्षण प्रक्रिया में अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए निम्न उपाय कर सकते हैं–

1. विद्यार्थियों में शिक्षकों के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति के विकास हेतु निम्न सुझाव दिए जा सकते हैं।

- शिक्षण कार्य के लिए प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के व्यक्तियों की नियुक्ति की जाए।
- छात्रों को भी सांस्कृतिक मूल्यों के परिवर्तन के द्वारा व्यक्तित्व के विकास की स्वतन्त्रता दी जाए।
- अध्यापकों को छात्रों को अत्यधिक उपदेश भी नहीं देना चाहिए और न ही छात्रों की प्रायः आलोचना की जाए अन्यथा किसी को आदर्श पात्र नहीं बना पाएंगें।

2. छात्रों के प्रति अध्यापकों का दृष्टिकोण भी इन्हीं आधारों पर परीक्षण किया जाए जहां इनके दृष्टिकोण में कमी हो उसमें सुधार किया जाए।
3. शिक्षकों की परिस्थितियों में भी सुधार करना चाहिए जैसे आर्थिक परिस्थितियों को इस प्रकार समायोजित करना चाहिए कि वह सुचारू रूप से अपना कार्य कर सके।

5.4 भावी अध्ययन के लिए सुझाव :

शोधकार्य के दौरान शोधार्थी समयाभाव तथा धन एवं साधन की कमी के कारण बहुत से अध्ययन बिन्दुओं को अपने शोध में शामिल नहीं कर सका। यदि उन छूटे बिन्दुओं पर कार्य किया जाए तो इस शोध का महत्व और भी बढ़ सकता है।

1. विद्यार्थियों के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति को अध्ययन का विषय बनाया जा सकता है।

2. अभिभावकों की अध्यापकों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में अनुसन्धान कार्य किया जा सकता है।

3. अध्यापकों के प्रति जनसाधारण की अभिवृत्ति पर शोध कार्य किया जा सकता है।

4. अध्यापकों की व्यवसायिक विशेषता को और अच्छा बनाने के प्रति शोध कार्य किया जा सकता है।

5. अध्यापकों के द्वारा छात्रों को आने वाली समस्याओं के शोध का विषय बनाया जा सकता है, जिससे छात्रों की समस्या दूर करके छात्रों की अध्यापकों के प्रति अभिवृत्ति को धनात्मक बनाया जा सकता है।

संदर्भ-ग्रन्थ सूची

एवं

परिशिष्ट

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अस्थाना, विपिन : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1990
2. ओपेनहाइम, ए0एन0 : क्वेश्चनेयर डिजाइन एण्ड एप्टिट्यूड मेजरमेंट, हाइनमैन, लन्दन– 1992
3. भार्गव, महेश : अनुसन्धान मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, मार्डर्न प्रिंटिग प्रेस, आगरा–1998
4. गुप्ता, एस0पी0 : अनुसन्धान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद–2014
5. गुप्ता, एस0पी0 आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद–2011
6. गैरेट, जे0पी0 : शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याणी पब्लिकर्श, नई दिल्ली–1989
7. गिलफोर्ड, जे0पी0 : फण्डामेन्टल स्टैटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशन, मैक्ग्राहिल बुक कम्पनी 1982
8. कपिल, एच0के0 : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2000
9. राय, पारसनाथ : अनुसन्धान परिचय, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–1999
10. पाण्डेय, के0पी0 : शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी–2012
11. शर्मा, आशीष : नवीन शोध संसार, वाल्यूम द्वितीय, नीमच–2014
12. सिंह अरूण कुमार : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, पटना–2013

परिशिष्ट

(i) अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का विवरण

क्र0सं0	प्राप्तांक	क्र0सं0	प्राप्तांक
1.	10	21.	25
2.	11	22.	26
3.	11	23.	26
4.	12	24.	27
5.	12	25.	28
6.	13	26.	28
7.	14	27.	24
8.	15	28.	24
9.	16	29.	25
10.	17	30.	25
11.	18	31.	25
12.	19	32.	26
13.	19	33.	26
14.	18	34.	27
15.	19	35.	28
16.	21	36.	28
17.	20	37.	29
18.	22	38.	29
19.	23	39.	30
20.	24	40	30

क्र0सं0	प्राप्तांक	क्र0सं0	प्राप्तांक
41.	31	63.	39
42.	32	64.	39
43.	32	65.	39
44.	33	66.	39
45.	34	67.	40
46.	34	68.	40
47.	35	69.	40
48.	36	70.	41
49.	37	71.	41
50.	38	72.	42
51.	31	73.	42
52.	32	74.	43
53.	33	75.	43
54.	33	76.	44
55.	34	77.	44
56.	35	78.	45
57.	36	79.	46
58.	37	80.	46
59.	38	81.	47
60.	39	82.	48
61.	38	83.	49
62.	38	84.	49

क०सं०	प्राप्तांक	क०सं०	प्राप्तांक
85.	50		
86.	50		
87.	51		
88.	51		
89.	52		
90.	53		
91.	53		
92.	54		
93.	55		
94.	56		
95.	57		
96.	58		
97.	58		
98.	58		
99.	59		
100	59		

(ii) हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का विवरण

क्र0सं0	प्राप्तांक	क्र0सं0	प्राप्तांक
1.	10	21.	23
2.	10	22.	24
3.	11	23.	25
4.	12	24.	26
5.	12	25.	27
6.	13	26.	28
7.	14	27.	30
8.	15	28.	30
9.	16	29.	31
10.	16	30.	31
11.	16	31.	31
12.	17	32.	32
13.	18	33.	32
14.	19	34.	32
15.	20	35.	32
16.	21	36.	33
17.	22	37.	33
18.	22	38.	34
19.	23	39.	34
20.	23	40	34

क्र0सं0	प्राप्तांक	क्र0सं0	प्राप्तांक
41.	34	63.	38
42.	35	64.	39
43.	35	65.	39
44.	35	66.	39
45.	36	67.	39
46.	36	68.	39
47.	36	69.	39
48.	36	70.	39
49.	36	71.	40
50.	36	72.	40
51.	36	73.	41
52.	36	74.	41
53.	36	75.	42
54.	37	76.	42
55.	37	77.	42
56.	37	78.	42
57.	38	79.	43
58.	38	80.	44
59.	38	81.	43
60.	38	82.	44
61.	38	83.	45
62.	38	84.	45

क्र0सं0	प्राप्तांक	क्र0सं0	प्राप्तांक
85.	46		
86.	47		
87.	48		
88.	49		
89.	49		
90.	50		
91.	51		
92.	51		
93.	52		
94.	43		
95.	54		
96.	55		
97.	56		
98.	57		
99.	58		
100	59		

छात्र का नाम : अंग्रेजी [ ] छात्र–छात्राओं [ ]

कक्षा हिन्दी [ ] छात्र–छात्राओं [ ]

विद्यालय का नाम

क्र0 सं0	कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
1.	शिक्षकों का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है।					
2.	शिक्षकों की वेशभूषा आपको प्रभावित करती है।					
3.	शिक्षकों के बोलने का ढंग प्रभावशाली होता है।					
4.	शिक्षकों का बोलने का ढंग प्रभावशाली एवं शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं होता है।					
5.	शिक्षक आदर्शों एवं सिद्धान्तों की केवल विवेचना करते है।					
6.	शिक्षक विद्यार्थियों के साथ कटु व्यवहार नहीं करते हैं।					
7.	शिक्षकों का व्यवहार पक्षपातपूर्ण नहीं होता है।					
8.	शिक्षकों में अतिआलोचना की प्रवृत्ति होती है।					
9.	शिक्षक शिक्षण कार्य में रूचि नहीं रखते है।					
10.	शिक्षक को नवीन शिक्षण पद्धतियों का ज्ञान					

	होता है।					
11.	शिक्षक को पढ़ाने के तरीके का ज्ञान नहीं होता है।					
12.	शिक्षक परीक्षा को ध्यान में रखते हुए पढ़ाते है।					
13.	शिक्षक को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान होता हैं।					
14.	शिक्षक का सामान्य ज्ञान अच्छा नहीं है।					
15.	शिक्षक पढ़ाते समय उत्कृष्ट देने की चेष्टा नहीं करते है।					
16.	शिक्षकों में रूचियों की व्यापकता होती है।					
17.	शिक्षकों में बौद्धिक योग्यता होती है।					
18.	शिक्षकों में निर्णय लेने की शक्ति नहीं होती है।					
19.	शिक्षकों में मानसिक सजगता नहीं होती है।					
20.	शिक्षकों में आत्म संयम का अभाव होता है।					
21.	शिक्षकों छात्रों को उनकी योग्यताओं और क्षमताओं से अवगत कराते है।					
22.	शिक्षक विद्यार्थियों की समस्याओं, कठिनाइयों तथा आवश्यकताओं को समझने का प्रयत्न नहीं करते है।					
23.	शिक्षक विद्यार्थियों के निकट आने का प्रयत्न नहीं करते है।					

24.	शिक्षक अभिभावकों से सम्पर्क स्थापित कर उचित पथ प्रदर्शन करते है।					
25.	शिक्षक विद्यार्थियों को राजनीति में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करते है।					
26.	शिक्षक छात्रों को विनाशकारी कार्यों में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करते है।					
27.	शिक्षक राजनीति में भाग नहीं लेते है।					
28.	शिक्षक विद्यालय में दलबन्दी करके शिक्षित वातावरण को दूषित करते है।					
29.	शिक्षक आदर्श नागरिकों के निर्माण में सहायक होते है।					
30.	शिक्षक समाज की प्रगति में सहायक हैं।					
31.	शिक्षक राष्ट्र की उन्नति में सहायक सिद्ध नहीं होते है।					
32.	शिक्षक विश्व बन्धुत्व की भावना से ओत–प्रोत होते है।					
33.	शिक्षक का नीरस व्याख्यान कक्षा में अनुशासन हीनता के लिए प्रेरित करता है।					
34.	शिक्षक छात्रों के समक्ष अनुशासन का आदर्श स्वरूप प्रस्तुत नहीं करते है।					
35.	शिक्षक प्रभावात्मक एवं मुक्तयात्मक रूप से अनुशासन स्थापित करने की चेष्टा करते है।					
36.	शिक्षक रोब जमाकर तथा डरा धमका कर कक्षा में अनुशासन स्थापित करने का प्रयास करते है।					